प्राचीन काव्यों की रूप-परम्परा

अगरचन्द नाहटा

भूमिका

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरे गत वर्षों में लिखे गये 'प्राचीन भाषा काव्यों की रूप परम्परा' के सम्बन्ध में लेखों का संग्रह है जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं जैसे—नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हिन्दी अनुशीलन, सम्मेलन पत्रिका, भारतीय साहित्य, कल्पना, अजन्ता, मरु-भारती, राजस्थानी, संयुक्त राजस्थान, वासंती, प्रेरणा, देवनागर, राष्ट्रभारती, शोध पत्रिका, लोक कला, जैन सत्यप्रकाश आदि में प्रकाशित होते रहे हैं। उनमें से केवल चौदह उत्कृष्ट लेखों का संकलन प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में चर्चित रचना प्रकारों के सम्बन्ध में गुजराती में दो अच्छे लेख प्रकाशित हो चुके हैं। जिसमें से प्रथम 'गुजराती साहित्य ना स्वरूपो' के लेखक मेरे विद्वान मित्र डा. मन्जुलाल मजमुदार हैं। उनका ८५० पृष्ठों का यह ग्रन्थ आचार्य बुक डिपो, बड़ौदा से सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ है। दूसरा ग्रन्थ 'मध्यकाल ना साहित्य प्रकारो' डा. चन्द्रकान्त मेहता का सन् १९५८ में—एन. एम. त्रिपाठी, बम्बई से प्रकाशित हुआ है। हिन्दी साहित्य में भी इसके सम्बन्ध में कुछ उल्लेखनीय काम हुआ है। डा. रामबाबू शर्मा ने 'हिन्दी के काव्य रूपों का अध्ययन' शोध प्रबन्ध लिखा है। उसका सारांश भारतीय साहित्य के अक्टूबर ५९ के अंक में प्रकाशित हुआ था। इसी प्रकार अन्य भी कई शोध प्रबन्धों में कतिपय काव्य रूपों की चर्चा की गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के 'फागु' नामक काव्य रूप पर मेरे विद्वान मित्र भोगेलाल सांडेसरा ने एक महत्वपूर्ण संग्रह प्रस्तुत किया है, जो सन् १९५५ में प्रकाशित हुआ है। उक्त 'प्राचीन फागु संग्रह' नामक ग्रन्थ में ३५ रचनाएं मूल रूप से छपी हैं तथा ग्रन्थारम्भ में फागु के साहित्य प्रकार पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। फागु रचना प्रकार के सम्बन्ध में विद्वद्वर श्री अक्षयचन्द्र शर्मा एम. ए. ने भी एक उल्लेखनीय लेख लिखा है जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है। 'रासो' रचना प्रकार के सम्बन्ध में एक विस्तृत अध्ययन और कतिपय महत्वपूर्ण रासो का संग्रह 'रास और रासान्वयी काव्य' नामक ग्रन्थ में किया गया है। यह ग्रन्थ काशी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हो चुका है। 'बरहमासों' के सम्बन्ध में डा. महेन्द्र प्रचण्डिया ने शोध प्रबन्ध लिखा

है। 'विवाहला काव्यों' के सम्बन्ध में श्री पुरुषोत्तम मेनारिया शोध कर रहे हैं। 'वेलि काव्यों' का आलोचनात्मक अध्ययन डा. नरेन्द्र भानावत ने अपने शोध प्रबन्ध में किया है। 'पवाड़ा काव्य' के सम्बन्ध में श्री उषा मल्होत्रा ने शोध कार्य आरम्भ किया था। उनके कई लेख और पवाड़े मरु-भारती में प्रकाशित हुए थे, पर वे अपना शोध कार्य पूरा नहीं कर पायीं। 'ख्यालों' के सम्बन्ध में जयपुर निवासी श्री प्रभूदत्तजी ने शोध प्रबन्ध लिखा है, वह अभी तक अप्रकाशित है। 'हियालियों और प्रहेलिकाओं' पर डा. शंकरदयाल चौऋषि व्यापक शोध कर रहे हैं। इसी प्रकार अन्य भी कई काव्य रूपों के पूर्णतः या आंशिक रूप पर कार्य हो रहा है। उन सब का यहां उल्लेख सम्भव नहीं है।

इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम लेख मेरे सूर्यमळ आसन से दिये हुए 'राजस्थानी जैन साहित्य सम्बन्धी तीन अभिभाषणों में से मध्यम अभिभाषण' का एक अंश है। इसमें ११७ रचना प्रकारों की नामावली देते हुए ८० काव्य रूपों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इन रचना प्रकारों का सर्वाधिक प्रयोग जैन कवियों ने ही किया है। शताब्दियों तक इस परम्परा को निभाने का श्रेय भी उन्हें ही दिया जा सकता है। जैन कवियों ने एक एक रचना प्रकार वाली कितनी ही रचनाएं निर्मित की हैं, जिनका आभास प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखों से भी अच्छी तरह मिल जाता है। 'बारहमासों' की संख्या तो इतनी अधिक है कि उनकी सूची देना भी सम्भव नहीं है। इसी प्रकार 'गीत' नामक काव्य रूप के भी इतने भेद हैं कि—उनको लेकर स्वतन्त्र शोध प्रबन्ध लिखा जा सकता है। महाकवि समय सुन्दर ने अनेक गीतों का निर्माण किया है जिनका संक्षिप्त विवरण मैंने अजन्ता के एक लेख में दिया है।

इस ग्रन्थ में जिन काव्य-रूपों की चर्चा की गई है वे अधिकांश श्वेताम्बर जैन कवियों द्वारा प्रयुक्त हैं। दिगम्बर जैन कवियों ने इन काव्य रूपों के अतिरिक्त और भी कई काव्य रूप अपनी हिन्दी रचनाओं में अपनाये हैं, जो मेरी जानकारी में हैं; पर उसकी चर्चा इस ग्रन्थ में नहीं की जा सकी है। इन काव्य रूपों में से अधिकांश की परम्परा अपभ्रंश काल से निरंतर चली आ रही है। अपभ्रंश भाषा की छोटी छोटी बहुत सी रचनाएं गुटका आदि संग्रह प्रतियों में होने से उनकी जानकारी अभी तक प्रकाश में नहीं आई है और बहुत सी ऐसी रचनाओं को दीमक नष्ट भी कर चुकी है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन करने का निर्णय तो दो-तीन वर्ष पूर्व हो गया था, पर कई कारणों से यह अब प्रकाश में आ रहा है। पूरी सावधानी बरतने पर भी कतिपय अशुद्धियां रह ही गई हैं। अगले संस्करण में ही इनका सुधार सम्भव है। मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा पाठकों का अवश्य ही ज्ञानवर्द्धन होगा। इस ग्रन्थ को प्रकाशित करके भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान ने एक उपयोगी कार्य किया है। अतः इस संस्था के अध्यक्ष धन्यवाद के पात्र हैं।

—अगरचन्द नाहटा

◆◆